Kavindra Ravindra Ka
Bharatiya Sahitya Par Prabhav
- Dr. Perisetti Srinivasa Rao

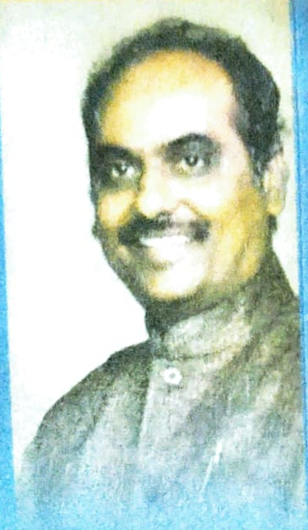

जन्म : 6 सितम्बर, 1969 ई. को राजमहेन्द्रवरम (आंध्रप्रदेश) में

शिक्षा : प्रारंभिक शिक्षा तथा स्नातक राजमहेन्द्रवरम के स्कूल-कोलेजों में

स्नातकोत्तर एवं एम.फिल (हिन्दी) आंध्र विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग से

पीएच.डी., उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा मद्रास, हैदराबाद केन्द्र से

अध्यापन : उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा (आंध्र) माचवरम, विजयवाडा केन्द्र में प्रवक्ता

संपादक : अमर अक्षरा त्रैमासिक

डॉ. पेरिसेट्टि श्रीनिवासराव का लेखन हिन्दी, तेलुगु और अंग्रेजी तीनों भाषाओं में उपलब्ध हैं। आलोचना, कविता, संपादन और अनुवाद के क्षेत्र में उनकी पुस्तकें अब तक प्रकाशित हो चुकी हैं

सम्मान : आंध्रप्रदेश हिन्दी अकादमी से तेलुगु भाषी युवा हिन्दी लेखक पुरस्कार से 2011 में सम्मानित किया गया

संपर्क : 31-4-23, #202 साईराम रेजीडेंसी, जी.पी.राव स्ट्रीट, मारुती नगर, विजयवाडा 520 004 (आंध्र प्रदेश)

ई-मेल : srperisetti@gmail.com

मोबाइल : +91 99892 42343

ISBN

ISBN 978-93-5258-615-8
9 789352 586158
₹ 600/

AKSHARA
SAAHITI - SANSKRITIKA - SEVA PEETHAM
RAJAHMUNDRY

अक्षरा

कवीन्द्र रवीन्द्र का भारतीय साहित्य पर प्रभाव

डॉ. पेरिसेट्टि श्रीनिवासराव

Kavindra Ravindra ka Bharatiya Sahitya par Prabhav
Proceedings of the National Seminar(Hindi) 2015
Organised by
Akshara Saahiti Sanskritik Sewa Peetham (Regd.)
Rajamahendravaram
In Collaboration with
Dept of Hindi, Acharya Nagarjuna University, Guntur (A.P)

ISBN : 978- 93- 5258-615-8

कवीन्द्र रवीन्द्र का भारतीय साहित्य पर प्रभाव

संपादक : डॉ. पेरिसेट्टि श्रीनिवासराव

अक्षरा साहिती सांस्कृतिक सेवा -पीठम, राजमहेन्द्रवरम - 533103

द्वारा प्रकाशित

Published by :
Akshara Saahiti Sanskritik Sewa Peetham (Regd.)
Office : 31-4-23, Flat No :202
Sai Ram Residency, G.P.Rao Street
Maruthi Nagar, Vijayawada - 520 004
Mobile : 0 9989242343 e -mail : srperisetti @gmail.com

© संपादक

प्रथम संस्करण : 2016

प्रतियाँ : 500

मूल्य : ₹ **699/-**

आवरण : अ. गिरिधर

कंप्यूटर कम्पोजिंग : सुधा प्रिंटिंग वर्क्स, अरंडल पेट, विययवाडा - 520002

मुद्रक : नागेंद्र प्रेस, गांधीनगर, विययवाडा - 520003

For copies :
Smt. **K.V.Seetha Devi**
Office : 31-4-23, Flat No :202
Sai Ram Residency, G.P.Rao Street
Maruthi Nagar, Vijayawada - 520 004
Mobile : 0 9989242343
e -mail : srperisetti @gmail.com

Kavindra Ravindra ka Bharatiya Sahitya par Prabhav(Criticism)- 2016
Edited by : Dr. Perisetti SrinivasaRao

22.साहित्य, कला एवं शिक्षा का त्रिवेणी संगम:विश्वकवि टैगोर - -डी.जनार्धन 128
23.रवीन्द्रनाथ टैगोर के विचार मे जन सामान्य की शिक्षा -श्रीनिवास परिमला 131
24.टैगोर की दृष्टि मे स्त्री शिक्षा - -जी. लीलावती 133
25.टैगोर की दृष्टि में भौतिक व आध्यात्मिक शिक्षा का संक्षिप्त परिचय - -एम.रामचंद्रम 135
26.वीद्रनाथ टैगोर : शिक्षा - दर्शन -शिवहर बिरातर 137
27.रवीन्द्रनाथ टैगोर की दृष्टि में नैतिक शिक्षा - प्रशांत दडिगे 139

भाग - दो

हिंदी साहित्य पर टैगोर का प्रभाव

28.कबीर के रवीन्द्र : रवीन्द्र के कबीर - रणजीत साहा 145
29.कवीन्द्र रवीन्द्र, पंत एवं निराला - अनिता गंगूली 156
30.करुणा के असाधारण प्रतीक रवीन्द्रनाथ और निराला- - अमरनाथ 161
31.रवीन्द्रनाथ टैगोर-हिन्दी साहित्य पर उनका प्रभाव -हेच.एस.एम. कामेश्वरराव 166
32.छायावादी कवि जयशंकरप्रसाद पर टैगोर का प्रभाव-एक विहंग वीक्षणम -पी. जयलक्ष्मी 170
33.रवीन्द्रनाथ टैगोर का व्यक्तित्व और हिन्दी केछायावादी - कवियों पर उनका प्रभाव -पी.वी.डी. श्रीदेवी 173
34.रवीन्द्र और दिनकर के काव्य में मानवतावादी चेतना -आर.श्रीनिवासराव पात्रो 178
35.कविवर रवीन्द्रनाथ का सुमित्रानन्दन पर प्रभाव -नागलगिद्द मारुति 184
36.रवीन्द्रनाथ टैगोर और हिंदी साहित्य पर उनका प्रभाव-युवराज़ धावन 186

भाग - तीन

तेलुगु साहित्य पर टैगोर का प्रभाव

37.प्रयोगधर्मी आधुनिक तेलुगु कविता पर विश्वकवि रवीन्द्र की छाप -आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी 191
38.गीतांजलि और एकांत सेवा में मधुर-भक्ति -पेरिसेट्टि श्रीनिवासराव 205
39.आधुनिक तेलुगु उपन्यास साहित्य पर रवीन्द्रनाथ टैगोर का प्रभाव -एस. कृष्णबाबु 211

40.भावकविता चक्रवर्ती कृष्णशास्त्री पर टैगोर का प्रभाव -सीहेच.वी.महालक्ष्मी 214
41.गीतांजलि का तेलुगु अनुवाद:एक मूल्यांकन -पोलानि सुरेश 221
42.हिन्दी और तेलुगु साहित्य पररवीन्द्रनाथ टैगोर का प्रभाव : एक परिचय -जी. मोहन नायुडु 224

भाग-चार

प्रमुख भारतीय भाषाओं (मुख्यतः दक्षिण) के साहित्य पर टैगोर का प्रभाव

43.कन्नड साहित्य पर रवीन्द्रनाथ टैगोर का प्रभाव -सुनीता मंजन बैल 229
44.मलयालम साहित्य पर रवीन्द्रनाथ टैगोर का प्रभाव -के. वनजा 238
45.तमिल और टैगोर - अंग्रेजी मूल : अशोक मित्रन,हिन्दी रूपांतर : -के. श्यामसुंदर 244
46.रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं महाराष्ट्र की परस्पर प्रभावाश्रितता -सोनु जेसवानी 248
47.उडिया साहित्य पर रवीन्द्रनाथ टैगोर का प्रभाव - एम.एस.वी.गंगा राजु 256
48.मणिपुर का साहित्यिक परिदृष्य और रवीन्द्रनाथ टैगोर -ई.विजयलक्ष्मी 259
49.गुजरात की आदिवासी भाषाओं में 'गीतांजलि' - आनंदकुमार 267

• • •

34

रवीन्द्र और दिनकर के काव्य में मानवतावादी चेतना

आर. श्रीनिवासराव पात्रो

मानवतावाद नये युग की चिन्तन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण विचार है और विश्व दर्शन की एक महान उपलब्धि। मानवतावाद की मूल और प्रधान स्थापना यह है कि मनुष्य अपने जीवन में नैतिक मूल्यों को अनिवार्य स्थान दे और अपनी सहानुभूतिमयी प्रवृत्तियों को जाग्रत कर अपने व्यवहार -क्षेत्र में आनेवाले प्रत्येक प्राणी के प्रति सदय रहे तथा मानवता की सेवा को ही अपना -प्रधान धर्म माने। नये युग का जीवन और साहित्य इस वाद से अवश्य प्रभावित है।

दिनकर का आविर्भाव हिन्दी साहित्य के एक ऐसे मोड़ पर हआ, जब सम्पूर्ण भारत, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक आंदोलन से गुजर रहा था। ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज एवं कई प्रकार के समाज सुधारकों ने जैसे राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, केशवचन्द्र सेन एवं रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द आदि धार्मिक नेताओं ने एवं बालगंगाधर तिलक, महात्मा गाँधी, सुभाषचन्द्र बोस आदि राजनीतिक नेताओं ने भारत को प्रभावित किया था। दिनकर भी इससे अछूत न रह सके और ये सभी चीजें दिनकर के काव्य में परिलक्षित होते हैं।

दिनकर मूलतः स्वच्छन्दतावादी कवि है। उनके प्रारंभिक काव्य में छायावाद की कल्पनाशीलता रोमांटिकता, विराट प्रकृति के प्रति जिज्ञासा एवं आकर्षण, राष्ट्रीयता, नवोथ्यानवादी भावना, वेदना, कुण्ठा और पलायन सभी तत्व विद्यमान है। उनके काव्य की मूल चेतना तीन धाराओं में वही है -प्रेम, कल्पना और सौंदर्य से युक्त श्रृंगार भावना, ओज से मुक्त राष्ट्रीयता और शांत या निर्वेद का भाव। इन सब के बीच स्वच्छन्दतावाद में ही विद्यमान थे और दिनकर की रचनाओं में भी ये तत्व हैं। यहाँ दिनकर पर रवीन्द्रनाथ टैगोर और नजरूल इस्लाम का प्रभाव पड़ा और साथ ही साथ उन्होंने युग की अभिव्यक्ति भी की है।

सहायक आचार्य (हिन्दी), शासकीय महाविद्यालय, पाडेरू-531024 , विशाखपट्टणम् जिला, (आं.प्र.).

भारतीय काव्य साहित्य में रवीन्द्रनाथ टैगोर एक व्यक्ति नहीं अपितु युग है। काव्य एवं कर्म दोनों में उनकी प्रतिभा का अपूर्व योगदान है। रवीन्द्र प्रमुख विचारक थे। उन्होंने बँगला भाषा को एक नया मोड़ दिया तथा साहित्य को सभी विधाओं में समान अधिकार से लिखा। उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी। आप प्रभावशाली चित्रकार तथा संगीतकार थे। भारत के स्वाधीनता संग्राम में उन्होंने सक्रिय भाग लिया था। उनका साहित्य एवं जीवन समानान्तर रथ के दो पहियों के समान राजमार्ग पर अग्रसर होता है।

रवीन्द्रनाथ को भारतीय मनीषा का प्रकाश स्तंभ बिना झिझक से कहा जा सकता है। दिनकर के अनुसार - ''हमारे वर्तमान लोहायुग में अगर कवित की मर्यादा को कोई काम रखे हुए हैं, तो वह रवीन्द्रनाथ हैं। ...कविताओं के क्षेत्र में कालिदास, तुलसीदास सूरदास तथा यूरोप के एक दो कवि रवि बाबू के प्रतिद्वन्दी हो सकते हैं। शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का जो विलक्षण परिचय दिया हैं, उसे देखते हुए ही ऐसा अनुमान होता है कि संसार के सभी कवियों की आत्माएँ अगर एक हाल में एकत्र की जा सके।,

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी का कथन हैं - रवीन्द्रनाथ ने सारे देश में कवियों और कलाकारों के अंतरंग की सर्जनात्मक प्रक्रियाओं को प्रभावित किया। वे कवियों के कवि और कलाकारों के कलाकार है। उनकी महत्ता इस (प्रभाव) में ही निहित हैं न कि उनकी अनूदित कृतियों की संख्या में अथवा छिछले अनुकरण के प्रयासों में।

भारतीय मनीषियों का लक्षण रहा हैं कि वे जब भारतीय दर्शन को नया रूप अथवा उसकी नयी व्याख्या करना चाहते हैं। तब वे प्रस्थानत्रयी (गीता, उपनिषद और ब्रह्म सूत्र) की व्याख्या करते हैं। प्रस्थानत्रयी में भारत वर्ष की श्रेष्टतम दार्शनिक अनुभूतियों के रक्त में मिश्रित है। उनका स्वभाव में समाया हुआ हैं। उनके विचारों और भावों के मूल में प्रतिष्ठित है। धर्म यहाँ वह है जो सन्तों के जीवन में दिखलाई पड़ता है, जैसा कि रामकृष्ण परमहंस और महात्मा गाँधी के जीवन में वह दिखलायी पड़ा था। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने प्राचीन दर्शनाचार्यों के समान उपनिषदों की व्याख्या लिखी है लेकिन उन्होंने ये व्याख्यान नये युग के संदर्भ में की। वे उपनिषद् पुत्र कहे जाते हैं। उपनिषदों की गेय में उनका विकास हुआ। उपनिषदों के गाम्भीर्य की महिमा से वह आनन्दित हुए थे। उपनिषदों में ब्रह्म को ''रस वैस : की संज्ञा दी गयी हैं। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इस ब्रह्म का अनुभव किया था। यही कारण

है कि उनकी वाणी में उपनिषदों का रस मिलता है। किन्तु रवीन्द्र मूलतः अनुभूति के कवि थे। उनके दार्शनिक चिन्तन का आधार अनुभूति है और इसी अनुभूति को उन्होंने अपने काव्य में वाणी दी हैं ।

रवीन्द्रनाथ की कविताएं जब कीट्स के सामने पहले पहल आयीं तब उसने अपने साहित्यिक मित्रों से चकित होकर कहा कि भारत में तो एक ऐसा कवि जन्मा हुआ है, जो हम सभी से कहीं श्रेष्ठ और महान है। रवीन्द्र की कविता में जो दिव्यता, कोमलता और सांस्कृतिक पवित्रता व्याप्त थी, उससे चकित होकर कवि एजरा पाउण्ड ने बड़ी विनयशील के साथ कहा कि ''जब मैं टैगोर से विदा होता हूँ तक मुझे मन-ही-मन यह भीन होने लगता हैं कि वह असम्य मनुष्य हूँ जो अभी खाल ही पहने हुए हैं और जिसके हाथ में मात्र पत्थर की लाठी पडीं हुई है।''

आयलैण्ड के उस मेधावी चिन्तक स्वर्गीय जार्ज रसल ने लिखा है जिसने रवीन्द्र को नहीं देखा, वह इस बात को समझ ही नहीं सकता कि पूर्व कालीन संसार में मनुष्यों की आत्मा पर कवि की आत्मा का वैसा अभेध्य साम्राज्य क्यों था।

रवीन्द्रनाथ की दार्शनिकता और आध्यात्मिक भारतीयता से अनुप्राणित है। टैगोर के दर्शन में ईश्वर, मनुष्य और प्रकृति तीन मूल तत्व हैं। तीनों एक अनिवार्य सम्बन्ध से बँधे हुये हैं। इनमें प्रमुखता मनुष्य ही की है। टैगोर का धर्म मानव धर्म है। वे मनुष्य के सर्वोच्य सत्य मानते हैं और उसके आध्यात्मिक विकास में जो भी बाधक है वह धर्म नहीं है। मानवता की सेवा, मानव भावना का विकास ही धर्म का उद्देश्य है। धर्म निष्क्रियता या सन्यास नहीं है।

टैगोर का मानवतावाद आध्यात्मिक धरातल पर विकसित हूआ था। इसमें यह धारणा निहित थी कि मनुष्य में जो देवत्व है वही उसे प्रेम के बन्धन में बाँधता है, मनुष्य का अपमान ईश्वर का अपमान है और मानव प्रेम तथा मानव सेवा ही सच्ची ईश्वर भक्ति है।

मानव को सम्बोधित कर रवीन्द्रनाथ ने कहा है - तू आँख खोलकर देख, देवता मन्दिर में नहीं है। जहाँ कृषक खेती कर रहे हैं तथा मजदूर बारहों महीने पत्थर तोड़ते हुए मार्ग बना रहे हैं वे उन्हीं के बीच उपस्थित रहते हैं। इन लोगों की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए लडने का साहस ही परमात्मा के प्रति सच्ची निष्ठा है। इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि मानवमूल्य सबसे बढ़कर है। धर्मशास्त्र, राष्ट्र और समाज के नियम कानून की सार्थकता इममें है कि वे मनुष्य के मनुष्यत्व में

सहायक हों। राष्ट्र, समाज और धर्म के आदर्श चाहे जितने उच्च और उदार क्यों न हो, किन्तु यदि उनके बावजूद मनुष्य का जीवन श्रृंखलित बना रहे, उसमें आत्म विकास का संयोग प्राप्त न होने उनका कुछ भी मूल्य नहीं हो सकता। मनुष्य यदि शरीर से स्वस्थ, मन से सबल और सतेज तथा ह्रदय से उदार और विशाल नहीं बना तो फिर राष्ट्र की व्यवस्था और समाज के नियम उसके लिए काम के हो सकते है?

रवीन्द्रनाथ टैगोर मानव अन्तकरण की पवित्रता को प्रमुख मानते हुए भी व्यक्ति को सामाजिक दायित्व की उपेक्षा नहीं करते थे। उनका कहना था कि '' जो व्यक्ति समाज के प्रति अपने कर्तव्य तथा दायित्व की अवहेलना करके शुद्ध जीवन का पूर्णत्व प्राप्त करना चाहते हैं वह सामाजिक साहचर्य और एकता के आदर्शों के साथ विश्वासघात करता है इस प्रकार हर क्षेत्र में उन्होंने संकीर्णता का विरोध किया।

अपनी स्वाभिमान एवं सेवा भाव की विशिष्ठता का परिचय देते हुए कवीन्द्र रवीन्द्र लिखते हैं - " Give me the strength to make my love fruitfull Service. Give me the Strength never to disown the poor or bend my knees before insolent Might. Give me the Strenghth to raise my mind alove daily trifles - And give me the Strengh to surrender my strength to thy with love."

महाकवि रवीन्द्र को मानवता एवं मानव शक्ति में अखण्ड विश्वास है । मानव शक्ति के विषय में उन्होंने कहा है कि मनुष्य को पृथ्वी पर स्वर्ग निर्माण करने का कार्य सौंप गया है और विधाता जो कुछ उसे देता है उससे वहीं अधिक मानव सृष्टि को दान कर देता है।

पारवीर दियेच गान गाय...सेइ *गान ।तार वेशि करना ,से दान ।अमारे दियेच स्वर आमि तारि विशि वरदान ।बंधन जा दिले मोरि करि तारे मुक्ति ते विलीन*

''पक्षी को तुमने गाना दिया है वह गाना गाता है। उससे अधिक कुछ नहीं दान करता। मुझे स्वर दिया है मैं उससे अधिक दान करता हूँ - मुझे जो बन्धन दिया है उसे मुक्ति में विलीन कर दूँगा।

हुमायूँ कबीर ने रवीन्द्रनाथ के मानव प्रेम के सम्बन्ध में लिखा है - '' रवीन्द्रनाथ ने धरती को इसलिये भी प्यार किया कि वह मनुष्य की वासस्थली है। अनगिनत कविताओं और गीतों में उन्होंने मनुष्य से ह्रदय की शायद ही कोई ऐसी संवेदना हो जिसने उनके ह्रदय को स्पन्दित नहीं किया।

रवीन्द्र के मानव प्रेम सम्बंध में दिनकर ने कहा है - रवीन्द्र भारतीय समाज सुधारक मात्र नही है। सच पूछिये तो भारतीय सुधारक राममोहन राय, दयानन्द, केशवचन्द्र, विवेकानन्द और बाल गंगाधर तिलक हुए है। गाँधी और अरविन्द तथा रवीन्द्र का ध्येय भारतीय समाज से अधिक मानव जाति का सुधार अथवा रूपान्तरण था। विश्ववाद की जो भावना गाँधी जी के कर्मयोग और अरविन्द की साधना में प्रतिफलित हुई, रवीन्द्र ने उसका सम्पूर्ण दर्शन अपने काव्य में प्रस्तुत किया है।

विश्वकवि रवीन्द्र की विश्वजनीयता बहुत प्रसिद्ध है। इसलिए लोकहित साथन में लीन मानवतावादी कवि शमधारी सिंह दिनकर की तुलना विश्वकवि रवीन्द्र से करना बहुत सहज है। इन दोनों महाकवियों ने समुन्नत कल्पना को अत्युन्नत स्थान दोनों पर भी मानव - सेवा - भाव तथा धार्मिक चिन्तन को भी समुचित स्थान दिया। अनुभूतिगत और सूक्ष्म भावनाओं को सुकोमल सरस भाषा में अभिव्यक्त करने में दोनों कवियों को अच्छी सफलता मिली।

रवीन्द्रनाथ विश्व साहित्य की विभूति है। उनके साहित्य और शिल्प पर समस्त विश्व तथा अखिल मानवता की अभिमान है। उनकी वाणी में समस्त मानवता का जयगान किया है। जो सत्ता विश्व सृष्टि की कर्तृशक्ति है और जिसमें परिचालन की प्रबलता है, वही जीव का देह में अन्तर्यामी रूप में अवस्थित रहती है। रवीन्द्रनाथ इस सत्य का साक्षात्कार हमें कराया है। कवि के नोबुल पुरस्कृत काव्य ''गीतांजलि' के प्रसिद्ध गीत चितजेया भय शून्य'' में कवि ने भारत में जिस स्वर्ग के जागरण की कामना व्यक्त की है वह उनका विश्व प्रेम का मानवता का एक उच्चगीत है। उनके सभी गान सार्वभौम है। *'प्रवासी'' में रवीन्द्रनाथ ने कहा है -*

सब टांई मोर घर आछे, आमि सेइ घर मरि खूँजिया

देशे देशे मोर देश आछे, आमि सेइ देश लव जूझिया।

*** *** ***

विशाल विश्व में चारों दिशाओं से प्रत्येक कोना मुझको खींच रहा है, मेरे द्वार पर समस्त जगत है जो करोड़ो हाथों से मुझे धकेल रहा है।

रवीन्द्र के समान दिनकर के गीतों में, कविताओं में विश्व प्रेम की भावनायें अभिव्यक्त है। उनका काव्य भी सह अस्तित्व, सहिष्णुता, भातृत्व भावना की स्त्रोतस्वनी धारा से आप्लावित है।

दिनकर मानव के कवि है। इनका मानवतावादी दृष्टिकोण अत्यन्त सुदृढ है। कवि दिनकर को सारी धरती दासता के बन्धन में जकड़ी हुई दृष्टिगोचर होती है। देश सम्राज्यवादी तृष्णा से अत्यन्त व्याकुल दिखाई पड़ता है। अपने उद्देश्य की पूर्ति के हेतु विनाशकारी शास्त्रों के निर्माण में लीन लोगों को देख-सुन मानवता कराह उठती है। उनके रेणुका, नीलकुसुम, कुरुक्षेत्र, रसवन्ती, रश्मिरथी आदि काव्यों में समस्त शोषित जातियों के आप्तस्वर सुनाई पड़ते हैं।

दिनकर के विचार से भारतीय स्वतन्त्रा का आंदोलन धरती के समस्त पराधीन दोशों का आंदोलन है और उनका यह विचार 'रेणुका' में संग्रहीत 'करमैदेवाय' में देखा जा सकता है।

रेणुका में ही कवि समाज में परस्परिक स्नेह, धार्मिक ऐक्य तथा पर्याप्त सुख-समृद्धि की मंगल कामना व्यक्त करते हुए कहता है-

''जन जन सन्तुष्ट रहे हिल-मिल आपस में प्रेम बढ़ाकर धर्म भिन्नता हो न, सभी जन शैली तटी में हिलमिल जायें। ऊषा के स्वर्णिम प्रकाश में भावुक भक्ति मुग्ध मन गायें।

कवि दिनकर के लिए भारत का भी वहीं रूप वन्दनीय हैं, जहाँ मानवता विश्वशांति तथा धर्म से समन्वित हो, व्यक्ति सत्य और न्याय पर अपने प्राणों का उत्सर्ग करने के लिए तत्पर रहे-

''उठे जहाँ भी घोष शान्ति का भारत स्वर तेरा हैं। / *धर्म-दीप हो जिसके भी कर में वह नर तेरा हैं, / तेरा हैं वह वीर, सत्य पर जो अड़ने जाता है* / किसी न्याय के लिए प्राण अर्पित करने जाता है।''

एक हाथ में करूणा, स्नेह, क्षमा, शान्ति का प्रतीक कमल धारण किये हुए तथा दूसरे हाथ में धर्म से संपृक्त को थामे हुए भारत की कल्पना पूर्णतः मानवतावादी भावनाओं से अनुप्रणित है।

एक हाथ में कमल, एक में धर्म की दीप्त विज्ञान / लेकर उठनेवाला है धरती पर हिन्दुस्थान।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर और राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर वस्तुतः मानवता के कवि हैं और मानवतावाद ही उनके जीवन दर्शन की परिधि का केन्द्रबिन्धु है। प्रकृति, सौंदर्य, भौतिकवाद, राष्ट्रीयतावाद, अंतर्राष्ट्रीयतावाद और आध्यात्मिकता आदि की विचारधाराओं की स्वीकृति और भिन्न भिन्न विचार धाराओं में समन्वय की योजना के मूल में दोनों का मानवतावाद और मानवकल्याण की भावना ही क्रियाशील है। ■